The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	A Study of Hindi Causative Verbs
Author(s)	Koga, Katsuro
Citation	大阪外国語大学学報. 1978, 42, p. 97-108
Version Type	VoR
URL	https://hdl.handle.net/11094/80714
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

A Study of Hindi Causative Verbs

Katsuro KOGA

हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ

कात्सुरो कोगा

000 हिंदी के शब्दकोशों में क्रिया में कर्म तथा प्रेरणार्थक रूप के संबंध में व्याकरणिक सूचनाएँ अधिकतर दो अथवा तीन प्रकार की मिलती हैं, अर्थात् १. अकर्मक क्रिया, २. अप्रेरणार्थक सकर्मक क्रिया और ३. प्रेरणार्थक क्रिया।

001 एक कोश में तीनों कोटियाँ मिलती हैं[1], दूसरे में दो कोटियाँ (१ और २)[2] और तीसरे में तीनों नहीं मिलतीं। बस " क्रिया " मात्र का संकेत मिलता है।[3]फिर चौथे कोश में तो "प्रथम" प्रेरणार्थक एवं " द्वितीय " प्रेरणार्थक का भेद भी दिखाया गया है।[4]

002 हमें यह भी देखना है कि हिंदी के व्याकरण ग्रंथों में " प्रेरणार्थक " क्रियाओं की परिभाषाएँ किस प्रकार की मिलती हैं। उनमें सामान्य आधार है या नहीं। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखकर प्रस्तुत निबंध में प्रेरणार्थक क्रियाओं पर विचार अन्य सकर्मक क्रियाओं की तुलना में किया जाएगा।

003 प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक ही होती हैं, इस लिए शब्द कोश में अकर्मक एवं सकर्मक दो कोटियाँ सूचित करने से कोशकार अपना कर्तव्य निभा भी सकता है। पर कोश का प्रयोग करनेवालों को इस प्रकार की सूचना अधिक से अधिक मिले तो प्रत्येक क्रिया शब्द की प्रकृति एवं अर्थ के समझने में अधिक सहायता मिलती है।

004 हमें यह अच्छी तरह देखना होगा कि कोशों एवं व्याकरण ग्रंथों में जो परिभाषाएँ "प्रेरणार्थक क्रिया" की मिलती हैं उनसे हिंदी सीखनेवालों को वास्तव में कितनी सहायता मिलती है ।

005 पं० कामताप्रसाद गुरु ने अपने व्याकरण में लिखा है," मूलधातु के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार में कर्त्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाती है उसे प्रेरणार्थक धातु कहते हैं, जैसे " बाप लड़के से चिट्ठी लिखवाता है। " इस वाक्य में मूलधातु "लिख " का विकृत रूप

"लिखवा" है जिससे जाना जाता है कि लड़का लिखने का व्यापार बाप की प्रेरणा से करता है ... " और आगे यह भी लिखते हैं, " आना, जाना, सकना, होना, रुचना, पाना आदि धातुओं से अन्य प्रकार के धातु नहीं बनते। शेष सब धातुओं से दो दो प्रकार के प्रेरणार्थक धातु बनते हैं, जिनके पहले रूप बहुधा सकर्मक क्रिया ही के अर्थ में आते हैं और दूसरे रूप में यथार्थ प्रेरणा समझी जाती है ; जैसे, "घर गिरता है।", "कारीगर घर गिराता है।", "कारीगर नौकर से घर गिरवाता है।" "लोग कथा सुनते हैं।", "पंडित लोगों को कथा सुनाते हैं।", "पंडित शिष्य से श्रोताओं को कथा सुनवाते हैं।"[5]

006 उन्होंने इस प्रकार "गिराता" और "सुनाते" को सकर्मकक्रिया की कोटि में रखने के बावजूद "प्रेरणार्थक क्रियाओं के बनाने के नियम " बताते हुए लिखा ।[6]

मूल धातु	पहला प्रेरणार्थक	दूसरा प्रेरणार्थक
उठना	उठा - ना	उठवा- ना
गिरना	गिरा - ना	गिरवा- ना
चलना	चला - ना	चलवा- ना
सुनना	सुना - ना	सुनवा- ना

007 "पहला प्रेरणार्थक" को रूप की दृष्टि से या यौगिक धातु के संदर्भ में अभिहित किया गया है, न कि अर्थ की दृष्टि से। इस प्रकार "गिराना" और "सुनाना " एक ही कोटि में रखे गये।

008 डा० हरदेव बाहरी ने "प्रेरणार्थक क्रिया" की परिभाषा इस प्रकार की दी है,

"जब कर्ता किसी कार्य को स्वयं न करके किसी दूसरे से कराए या करवाए(अर्थात् कोई किसी को कार्य करने की प्रेरणा दे), तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। उदाहरण - राम जग उठा।(अपने आप बिना किसी की प्रेरणा के) गोविंद ने राम को जगाया। (राम गोविंद की प्रेरणा से जागा) गोविंद ने राम को जगवाया(गोविंद ने किसी को प्रेरणा दी कि राम को जगा दो)[7]

009 इस प्रकार उन्होंने "जगाना" को प्रेरणार्थक क्रिया की कोटि में रखा है। परंतु वे अन्यत्र सकर्मक क्रियाओं के संदर्भ में लिखते हैं,

उड़ना - उड़ाना उखड़ना - उखाड़ना फटना - फाड़ना

उठना - उठाना   उबलना - उबालना   टूटना - तोड़ना

सूचना - प्रेरणार्थक क्रियाएँ भी सकर्मक क्रियाएँ होती हैं। ऊपर की सूची में परिवर्तन के नियम वही हैं जो प्रेरणार्थक क्रिया बनाने में लागू होते हैं। अन्तर यह है कि ऊपर की सूची में दी गई सकर्मक क्रियाओं में किसी को प्रेरणा नहीं दी जाती, कर्ता स्वयं ये क्रियाएँ करता है । "[8]

010 "राम चिड़ियों को उड़ाता है "

उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार इस वाक्य में चिड़ियों के उड़ने में राम की प्रेरणा नहीं पाई जाती। अब प्रश्न उठता है कि "जगाना" और "उड़ाना" में किस प्रकार कीव्याकरणिक भिन्नता है जिसके आधार पर इन दोनों को अलग अलग कोटि में रखा जाए।

011 डा० आर्येन्द्र शर्मा ने प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया के संदर्भ में बताया है कि " द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएँ केवल उन्हीं प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं की बन सकती हैं जिनके कर्ता वास्तविक व्यापार करते हैं जैसे पढ़ना - पढ़ाना - पढ़वाना, गिरना - गिराना - गिरवाना। पर "करना" की द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बन सकती।"[9]

012 उसमें "पढ़ाना" और "गिराना" को एक ही कोटि में रखा गया है और दोनों को "प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया" सिद्ध किया गया है। तात्पर्य यह है कि उनकी परिभाषा के अनुसार सकर्मक क्रिया से बननेवाली क्रियाओं के अतिरिक्त अकर्मक क्रिया धातुओं से बननेवाली क्रियाएँ भी आ जाती हैं।

013 श्रीमती सुधा कालरा ने यह माना है कि हिंदी की प्रेरणार्थकक्रियाएँ केवल रुपात्मक प्रक्रिया से निश्चित नहीं की जा सकतीं। ये क्रियाएँ अर्थविषयक मान्यताओं एवं वाक्यविन्यास से भी अभिप्रेरित होती है।[10] फिर भी उन्होंने "प्रथम" एवं "द्वितीय" की कोटियाँ पूर्ववत् रख छोड़ी हैं।

014 इस प्रकार हिंदी के कोश, व्याकरण आदि में "प्रेरणार्थक" शब्द का प्रयोग मुख्यतया क्रियाओं की रुप-रचना की समानता को प्रगट करने के लिए होता आया है। तथाकथित "प्रथम प्रेरणार्थक " और "द्वितीय प्रेरणा-अर्थक" के बीच किस प्रकार की व्याकरणिक भिन्नता है अथवा "अप्रेरणार्थक सकर्मक" और " प्रेरणार्थक " क्रियाओं के मध्य किस प्रकार का भेद है, इस की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है।

015 डा० आर्येन्द्र शर्मा ने भी "पीना" का प्रथम प्रे०(प्रेरणार्थक) रुप

"पिलाना" बताया है और द्वितीय प्रे० रूप "पिलवाना" माना है। उनके अनुसार प्रेरणार्थक की दो कोटियाँ इस प्रकार की हैं ।

सोना	सुलाना (प्रथम प्रे०)	सुलवाना (द्वितीय प्रे०)
बैठना	बैठाना	बैठवाना
धोना	धुलाना	(धुलवाना)

"धुलवाना" को "धुलाना" का समानार्थी बताया गया है और "धोना" का द्वितीय प्रे० रूप नहीं माना गया है।

016 पं० किशोरीदास वाजपेयी ने भी "खिलाना" और "धुलाना" को एक ही कोटि में रखा है। उनकी प्रेरणार्थक संबंधी परिभाषा के अनुसार असली कर्ता "को" या "से" के साथ आता है।

(१) मा बच्चे को मक्खन खिलाती है

(२) मालिक नौकर से कपड़े धुलाता(धुलवाता) है

गौण कर्म यानी असली कर्ता में जो विभक्तियाँ लगती हैं और उनमें जो भेद है, कुछ आधार रखता है।... यों "को" विभक्ति ने क्रिया की प्रवृत्ति असली कर्ता के हित में सूचित की ।... जब क्रिया की प्रवृत्ति प्रयोजक कर्ता के हित में होती है, असली कर्ता को जब एक साधन मात्र बनना पड़ता है और क्रिया का फल दूसरा भोगता है, तब(असली कर्ता में) "से" विभक्ति लगती है... "[11]

017 प्रे० मैकग्रेगर ने अपने हिंदी व्याकरण में संक्षेप में प्रेरणार्थक क्रियाओं का लक्षण बता दिया है।[12] परंतु उन्होंने "लदाना, लदवाना", "धुलाना, धुलवाना" आदि युग्मों एवं "दिखाना, दिखवाना", "पिलाना - पिलवाना", आदि युग्मों के अस्तित्व से उत्पन्न होनेवाली समस्या के संबंध में तो कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं की है। केवल ऐसी स्थिति की सूचना मात्र उस व्याकरण में मिलती है।[13]

018 अब हमें इस बात की जाँच करनी है कि "पिलाना", "सुलाना", "उड़ाना" और "धुलाना" में व्याकरणिक समानताएँ क्या क्या हैं। फिर "पिलवाना", "सुलवाना", "उड़वाना" आदि में क्या क्या समानताएँ हैं। इन दो कोटियों को निश्चित करने का औचित्य है कि नहीं ।

019 प्रयोग के आधार पर इन दो कोटियों को परखा जाएगा।

(१) बच्चा पानी पीता है।

(२) सीता बच्चे को पानी पिलाती है।

(३) सीता नौकरानी से बच्चे को पानी पिलवाती है।
(४) बच्चा सो रहा है।
(५) सीता बच्चे को सुला रही है।
(६) सीता नौकरानी से बच्चे को सुलवाती है।
(७) चिड़ियाँ उड़ती हैं।
(८) राम चिड़ियों को उड़ाता है।
(९) राम सोहन से चिड़ियों को उड़वाता है।
(१०) नौकरानी कपड़े धोती है।
*(११) राम नौकरानी को कपड़े धुलाता(धुलवाता) है।
(१२) राम नौकरानी से कपड़े धुलाता(धुलवाता) है।

*वाक्य (११) में "को" का प्रयोग व्याकरण-सम्मत नहीं है।

020 वाक्य (२),(५), (८) में " को" का प्रकार्य भिन्न-भिन्न है। (२) में "को" गौण कर्म का और वाक्य (५) व (८) में "को" (मुख्य) कर्म का द्योतक है।

021 (३),(६), (९) और (१२) में " से" का प्रकार्य समान है। जिनके द्वारा वास्तविक क्रिया-व्यापार(पिलाना, सुलाना, उड़ाना और धोना) सम्पन्न होता है वे समान रूप से " से" के साथ आते हैं।

022 वाक्य (२),(५) और (८) में कर्ता गौण कर्म के साथ सीधा संबंध स्थापित करता है। वाक्य (३), (६),(९) और (१२) की तरह किसी दूसरे के माध्यम नहीं।

023 "पिलाना","सुलाना" और "उड़ाना" में कर्ता किसी न किसी रूप में वास्तविक क्रिया-व्यापार करता है। क्रिया की वास्तविक मात्रा न्यून अथवा अधिक हो सकती है। परंतु "उड़ाने" का काम भी सदा एक समान नहीं होता। जैसे, (१) बेटा पतंग उड़ाता है।
(२) बेटा चिड़ियाँ उड़ाता है।

इस युग्म के वास्तविक व्यापार में कितना बड़ा अंतर है। पतंग में चिड़िया की तरह उड़ने का सामर्थ्य नहीं है।

024 (३) बाप बेटे से चिड़ियाँ उड़वाता है।

वाक्य(३) में "उड़ाने" का काम बेटे द्वारा सम्पादित होता है। बाप "उड़ाने" का काम स्वयं न करके बेटे से कराता है। अतः (३) को (१) और(२) से भिन्न कोटि में रखना होगा।

025 अब हम भेजना शब्द को लेंगे। "मानक हिन्दी कोश" में "भेजना" का अर्थ इस प्रकार दिया गया है, – (सकर्मक क्रिया) १ आग्रह करके या आदेश देकर किसी व्यक्ति को कहीं जाने में प्रवृत्त करना। प्रस्थान करना। रवाना करना। जैसे – नौकर(या लड़के) को सामान लाने के लिए बाजार भेजना ...

026 हमें देखना होगा कि "भेजने" में और "पिलाने" में किसी को क्रिया में प्रवृत्त करने की दृष्टि से कितना अंतर है जिसके आधार पर एक को प्रेरणार्थक सकर्मक क्रिया की उपाधि मिली, दूसरे को अप्रेरणार्थक सकर्मक क्रिया की।

027 फिर आदमी को कहीं जाने के लिए "प्रवृत्त" किया जा सकता है, परंतु /पुस्तक भेजने/ में तो पुस्तक को कहीं जाने के लिए प्रवृत्त नहीं किया जा सकता।

028 यही बात "पिलाने" के संदर्भ में भी देखी जाती है। जैसे,
(क) बच्चे को दूध पिलाना, (ख) दीवार के दरारों में सीसा या राँगा पिलाना

029 अब हम "करना" का प्रयोग परखेंगे।

१ ब्राह्मण भोजन करता है।
२ राम ब्राह्मण को भोजन कराता है।
३ राम भाई से ब्राह्मण को भोजन कराता है। (अथवा करवाता है।)
४ मोहन चोरी करता है।
५* राम मोहन को चोरी कराता है।
६ राम मोहन से चोरी कराता(करवाता) है।

भोजन वाले तीनों वाक्य ठीक हैं। परंतु चोरी वाला दूसरा वाक्य(५) अशुद्ध है। अतः "करना" का प्रयोग भी कर्म या व्यापार की प्रकृति के अनुसार बदलता है। वास्तविकता यह है कि "करना" के तथाकथित "प्रथम" एवं "द्वितीय" प्रेरणार्थक रुप समान हैं(करना अथवा करवाना), न कि "करना" का द्वितीय प्रे० रुप ही नहीं होता। यह बात डा० आर्येन्द्र शर्मा की "द्वितीय प्रेरणार्थक" संबंधी परिभाषा के विरुद्ध है।[14]

030 "प्रेरणार्थक क्रिया" की पारंपरिक परिभाषा के अनुसार पढ़ना, पीना, पकड़ना, धोना आदि क्रियाएँ एक ही कोटि के अंतर्गत रखी जाती हैं। अर्थात् ये प्रेरणार्थक क्रियाओं की मूल सकर्मक क्रियाएँ मानी जाती हैं। अब हम इन

को एक ही कोटि में रखने के औचित्य पर विचार करेंगे।

क. पढ़ना(सीखना)

(१) राम स्कूल में अंग्रेजी पढ़ता है।

(२) राम स्कूल में लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाता है।

(३) राम स्कूल में मास्टर से लड़कों को अंग्रेजी पढ़वाता है।

पढ़ना(बाँचना, पाठ करना)

(४) राम चिट्ठी पढ़ता है।

*(५) राम लड़के को चिट्ठी पढ़ाता है।

(६) राम लड़के से चिट्ठी पढ़वाता है।

ख. पकड़ना (भागते हुए चोर को)

(१) राम चोर को पकड़ता है।

*(२) राम पुलिस के सिपाही को चोर को पकड़ाता है।

(३) राम पुलिस के सिपाही से चोर को पकड़वाता(पकड़ाता) है।

पकड़ाना (हाथ का गिलास)

(४) राम दुकान के छोकरे को गिलास पकड़ाता है।

(५) राम भाई से दुकान के छोकरे को गिलास पकड़वाता है।

ग. धोना

(१) राम कपड़े धोता है।

*(२) राम नौकरानी को कपड़े धुलाता है।

(३) राम नौकरानी से कपड़े धुलाता (धुलवाता) है।

घ. सोना

(१) माँ सोती है।

(२) माँ बच्चे को सुलाती है।

(३) माँ नौकरानी से बच्चे को सुलवाती है।

च. देना (जमीन सेठ जी की है)

(१) सेठ जी जमीन ब्राह्मण को देता है।

*(२) सेठ जी जमीन भाई से ब्राह्मण को दिलाता(दिलवाता) है।

देना (जमीन भाई की है)

(३) सेठ जी जमीन भाई से ब्राह्मण को दिलवाता(दिलाता) है।

031 पारंपरिक परिभाषा के अनुसार "पढ़ाना", "पढ़वाना" / पढ़ना(२)(३)/, "धुलाना(धुलवाना)"/ धोना (३)/, एवं "सुलाना" और

"सुलवाना" / सोना (२), (३)/ में किसी की "प्रेरणा" मानी जाती है। "पढ़ाना", "धुलाना(धुलवाना)" और "सुलाना" को प्रथम(अथवा प्रत्यक्ष) प्रेरणार्थक रूप माना जाता है।

032 परंतु इस पारंपरिक "प्रथम प्रेरणार्थक" क्रिया की कोटि में आनेवाली क्रियाओं के कर्त्ताओं का वाक्यों में प्रकार्य समान नहीं है। "पढ़ना"(२) के कर्त्ता और (३) के कर्त्ता के बीच जो संबंध है वह "पढ़ना" (४) व (६) के बीच देखा जाता है। फिर यही संबंध "सोना" (२) और (३) में तथा "धोना" (१) और (३) में भी पाया जाता है। "पढ़ना" (२) और (३) में अंतर केवल सिखानेवाले का है। दोनों में समान रूप से लड़कों को अंग्रेजी सिखाई जाती है।

033 ऊपर 030 में * चिह्न वाले वाक्य व्याकरण-सम्मत नहीं हैं। इन वाक्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी क्रिया धातु में तथाकथित "द्वितीय प्रेरणार्थक" रूप का अभाव नहीं है, परंतु "प्रथम प्रेरणार्थक" रूप का अभाव है, जैसे "पढ़ना" (५) में । तथाकथित मूल क्रिया, प्रथम प्रे० रूप एवं द्वितीय प्रे० रूप का वितरण क्रिया की प्रकृति के अनुसार निश्चित होता है। इस लिए "पढ़ना"(सीखना) और "पढ़ना"(बाँचना) में "रूपों" का वितरण समान नहीं है। "पकड़ना" के संदर्भ में भी यह बात देखी जा सकती है।

034 अब हम नीचे सकर्मक क्रियाओं को उनकी प्रकृति के अनुसार वर्गों में विभक्त कर तालिका रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(अंग्रेजी)पढ़ना			
	(अंग्रेजी)पढ़ाना		(अंग्रेजी)पढ़वाना
		(चिट्ठी)पढ़ना	(चिट्ठी)पढ़वाना
		(चोर) पकड़ना	(चोर) पकड़वाना (पकड़ाना)
(किसी के हाथ से गिलास लेना या) पकड़ना			
	(हाथ का गिलास) पकड़ाना		(-) पकड़वाना(पकड़ाना)

(कपड़े) धोना (कपड़े) धुलाना
(धुलवाना)
(बच्चे को) (बच्चे को)
सुलाना सुलवाना

(किताब)लेना
या पाना

(किताब)देना (किताब) दिलाना
(दिलवाना)

035 (ख) वर्ग के अंतर्गत उन क्रियाओं को रखा जाता है जो (क) वर्ग की क्रियाओं के कार्यव्यापार को दूसरे से कराने के लिए किया जाता है। (ख) वर्ग में (क) वर्ग का कार्यव्यापार दूसरे द्वारा सम्पन्न किया जाना मात्र नहीं है। (क) वर्ग की क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके कार्यव्यापार को स्वयं न करके किसी दूसरे से कराने पर उसका फल(परिणाम) भिन्न हो जाता है। इन क्रियाओं में क्रिया का फल कर्त्ता ही को मिलता है। (ख) वर्ग की क्रियाओं के कार्यव्यापार को सम्पादित करने के लिए कर्त्ता का वास्तविक काम अपेक्षित है। "अंग्रेजी पढ़ाना" ऐसा काम करना होता है जिससे दूसरा आदमी अंग्रेजी सीखे। यह आदेश देने मात्र से सम्पन्न नहीं होता। और यह भी नहीं कि किसी के स्थान अंग्रेजी सीखे। (ख) वर्ग की क्रियाएँ द्विवकर्मक होती हैं।

036 (ख) वर्ग एवं (ग) वर्ग की क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके कार्यव्यापार को स्वयं न करके दूसरे से कराने पर भी समान फल मिलता है। इस लिए वर्ग (ख) एवं (ग) के कार्यव्यापार को स्वयं न करके दूसरे से कराया जा सकता है। वर्ग (घ) की क्रियाएँ वर्ग (ख) और (ग) के कार्यव्यापार को स्वयं न करके अपने स्थान दूसरे से कराने पर सम्पन्न होती हैं।

037 हम देख चुके हैं कि एक ही क्रिया धातु को भी अर्थभेद के कारण भिन्न-भिन्न वर्गों के अंतर्गत रखा जाता है। फिर यह आवश्यक नहीं कि (क) वर्ग की क्रिया और (ख) वर्ग की क्रिया में सदा रूपात्मक संबंध हो।

038 (ख) वर्ग अथवा (ग) वर्ग की क्रियाधातु के वर्तमान होने का तात्पर्य यह नहीं कि आवश्यक रूप से उसका (घ) रूप हो या प्रयुक्त हो।

039 हिंदी में कुछ सकर्मक क्रियाएँ ऐसी भी मिलती हैं जो कर्त्ता की जानकारी

या चेतना के बिना होती हैं जैसे गँवाना, खोना, (चिट्ठी लिखना) भूलना आदि। इन क्रियाओं को (क) वर्ग के अंतर्गत भी नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि इन क्रियाओं का कार्यव्यापार दूसरे आदमी से नहीं करा सकते।

040 अब 034 वाली तालिका का अगला भाग नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

(क)	(ख)	(ग)	(घ)
खाना	खिलाना		खिलवाना
पहनना	पहनाना		पहनवाना
		(घोड़ा) बाँधना	(–) बँधवाना (बँधाना)
(धीरज) बाँधना	(–) बँधाना		
		(चोरी) करना	(–) कराना (करवाना)
(भोजन) करना	(–) कराना		(–) करवाना
(सैर) करना	(–) कराना		(–) करवाना
(विश्वास) करना	(–) दिलाना		
		(पत्थर) उठाना	(–) उठवाना
जानना	जताना		
मानना	मनाना		मनवाना
सोचना	सुचाना		
		(भीख) माँगना	(–) मँगवाना (मँगाना)

(किताब) मँगाना (-)मँगवाना

(पानी) बहाना

(मुसाफ़िरों को) लूटना (-) लुटवाना

(पैसा) लूटना

(गरीबों को पैसा) लुटाना

(दुखद बात) भुलाना

(-) भुलवाना

041 इस प्रकार सिद्ध होता है कि पारंपरिक "प्रथम (प्रत्यक्ष) प्रे० " रुप अथवा "द्वितीय (परोक्ष) प्रे०" रूप की कोटियाँ निर्धारित करने का कोई ठोस आधार नहीं है। हमारे विचार में (क) वर्ग की क्रियाओं को (ख) एवं (ग) की क्रियाओं से भिन्न कोटि में रखना उचित है और (घ) वर्ग की क्रियाओं को (ख) वर्ग एवं (ग) वर्ग की क्रियाओं से भिन्न कोटि में रखना होगा। प्रस्तु पंक्तियों के लेखक की दृष्टि में हिंदी के व्याकरणों में प्रचलित पारिभाषिक शब्द "प्रेरणार्थक क्रिया" का प्रयोग बड़ा भ्रामक और हानिकारक है। दूसरे को किसी क्रिया के लिए प्रवृत्त करने का काम करना एक बात है और अपने स्थान दूसरे से कोई काम कराना दूसरी बात है। शब्दकोश में उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर सूचना देना श्रेयस्कर होगा। इससे हिंदी की क्रियाओं की व्याख्या अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

पाद-टिप्पणियाँ

(1) हिंदी शब्द सागर, परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण, वाराणसी, १९६५-७५ रामचंद्र वर्मा (सं०), मानक हिंदी कोश, इलाहाबाद संवत् २०१९

(2) बृहत् हिंदी कोश, बनारस, संवत् २०१३

(3) भोलानाथ तिवारी (सं०), व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी कोश, दिल्ली, १९७५

(4) John T. Platts, A dictionary of Urdu, classical Hindi, and English, London,

1968

(5) कामता प्रसाद गुरु, हिंदी व्याकरण, वाराणसी, संवत् २०२९, पृ० ८८

(6) कामता प्रसाद गुरु, वही, पृ० ८९

(7) हरदेव बाहरी, व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, इलाहाबाद, १९७४, पृ० १०७

(8) हरदेव बाहरी, वही, पृ० ११२ – ११३

(9) Aryendra Sharma, A basic grammar of modern Hindi, New Delhi, pp. 115–116 (1972)

(10) सुधा कालरा, हिंदी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ, भाषा – हिंदी भाषा विज्ञान अंक, नई दिल्ली, १९७३, पृ० २२२

(11) किशोरीदास वाजपेयी, हिंदी शब्दानुशासन, काशी, संवत् २०२३ पृ० ४६१ – २

(12) '... Verbs showing final stem syllable -vâ are almost all used in construction with agentive expressions containing the postposition se.'

R. S. McGregor, Outline of Hindi grammar, London 1972, p. 113

(13) R. S. McGregor, p. 114

(14) '... On the other hand, in the case of a root like करना 'to do', the first causal कराना 'to get done' does not denote an activity on the part of the subject, but merely an order or a direction to somebody (a servant etc.) to do something. This verb, therefore, cannot have a second causal. A basic grammar of modrn Hindi, p. 116